भगत रविदास – सबद १७
सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥
रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५८

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥
चारि पदार्थ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥
हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥

सार: सोचने-समझने के कुछ शांत पल हमें यह समझने में मदद करते हैं कि जिसे हम खोज रहे हैं, वह पहले से ही हमारे पास है। हम अक्सर कल्पना करते हैं कि तृप्ति कहीं आगे है, एक और लक्ष्य, एक और उत्तर, एक और उपलब्धि। लेकिन, वास्तव में, पूर्णता पहले से ही हमारे अंदर मौजूद है जो अक्सर लगातार भाग-दौड़ के शोर में छिप जाती है। मन की आंतरिक स्पष्टता को चिंतामणि, यानी इच्छा पूरी करने वाला रत्न और कामधेनु, यानी इच्छा पूरी करने वाली गाय कहा जा सकता है। यह कोई जादुई चीज़ें या जीव नहीं हैं बल्कि जागरूकता के अंदरूनी स्रोत के प्रतीक हैं जो वास्तव में महत्वपूर्ण को पोषित करती हैं। यह अंदरूनी स्पष्टता तब उभरती है जब हम ठहरते हैं, भीतर देखते हैं और उस समृद्धि को पहचानते हैं जो सदैव हमारे साथ रही है।

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥

सुख का सागर, दिव्य प्राणी, इच्छा पूरी करने वाले रत्न और चमत्कारी गायें, यह सब आपके हुक्म पर हैं। यह लाक्षणिक प्रतीक बताते हैं कि समृद्धि का चमत्कार उन लोगों के भीतर है जो जागरूकता से जुड़ते हैं।

चारि पदार्थ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥
चार वरदान, आठ आध्यात्मिक अवस्थाएँ, रहस्यमयी शक्तियाँ और नौ ख़ज़ाने ऐसे व्यक्ति के चरणों में हैं। यह दर्शाता है कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने की चाहत, सचेत जीवन जीने की तुलना में तुच्छ व महत्त्वहीन है। (१)

हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥
हमारी चेतना को सर्वव्यापी जागरूकता की गूंज याद नहीं रहती। यह बातें दिखाती हैं कि जागरूकता के इतने पास होने के बावजूद हम अज्ञानता को चुन लेते हैं।

अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥
सभी दिखावटी बातों और उलझे हुए विचारों को नज़रअंदाज़ करें। यह सीधी-सरल, ईमानदार अभिव्यक्ति के लिए आह्वान है। (१)(विराम)

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥
विभिन्न महाकाव्य, धार्मिक ग्रंथ और ज्ञान की किताबें वर्णमाला के चौंतीस अक्षरों में संरचित हैं। यह दिखाता है कि शब्द सच्चाई को प्रकट करने के उपकरण हैं और उन्हें उनके रूप के लिए पूजने के बजाय, उनके द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि के लिए महत्व देना चाहिए।

बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥
दार्शनिक ग्रंथों के लेखक व्यास ने गहन चिंतन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि सर्वव्यापी सार के समान कुछ भी नहीं है। यह अंतर्दृष्टि बताती है कि सबसे प्रबुद्ध भी इस बात से सहमत हैं कि शास्त्र ज्ञान अनुभवात्मक ज्ञान से कम है। (२)

सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥
यह सौभाग्य की बात है कि जब हम स्वयं को चिंतन से सुशोभित करते हैं तब जटिलता से मुक्त शांति की अवस्था प्रकट होती है।

कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥
रविदास कहते हैं कि इस आंतरिक प्रकाश को अपनाने से जन्म और मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि जब भीतर जागरूकता का आलोक चमकता है तब कोई भी बाहरी परिस्थिति लाभ या हानि का भय पैदा नहीं कर सकती। (३)(४)

तत्त्व: भक्त रविदास इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सभी सांसारिक और धार्मिक प्रयास आंतरिक सद्भाव प्राप्त करने के लिए द्वितीय हैं। वह इस बात का समर्थन करते हैं कि केवल शास्त्रों का पाठ करने के बजाय ईमानदारी की नेकनीयती ही अहंकार, भय और भ्रम के चक्रों को तोड़ सकती है। जब मन शांत होता है और विचार वास्तव में उस शांति को दर्शाते हैं तब विवेक एक अवर्णनीय आनंद के लिए जागृत होता है। मुक्ति की इस अवस्था में, सभी बाहरी ख़ज़ानों की तलाश अर्थहीन हो जाती है जिनकी खोज में मनुष्य भटकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com